PGDSHST

# सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
# (पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)

## सत्रीय कार्य
## 2026

(जनवरी 2026 और जुलाई 2026 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू जन–जन का विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

# सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
## (पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)
## सत्रीय कार्य 2026

## (जनवरी 2026 और जुलाई 2026 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'सिंधी–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' (पी.सी.एस.एच.एस.टी.) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस अध्ययन कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। आठ पाठ्यक्रमों वाले इस कार्यक्रम के छह पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा और दो पाठ्यक्रम 'अनुवाद परियोजना' से संबंधित हैं। सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं! सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि इस प्रकार हैं :

| पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक | प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि* | |
|---|---|---|
| | जनवरी 2026 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए | जुलाई 2026 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए |
| एम.टी.टी.–001<br>भारतीय भाषाओं में अनुवाद | 30.09.2026 | 31.03.2027 |
| एम.टी.टी.-041<br>सिंधी–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन | 30.09.2026 | 31.03.2027 |
| एम.टी.टी.–042<br>सिंधी–हिंदी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद | 30.09.2026 | 31.03.2027 |
| एम.टी.टी.–043<br>अनुवाद सिद्धांत और सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद परंपरा | 30.09.2026 | 31.03.2027 |
| एम.टी.टी.–044<br>अनुवाद प्रक्रिया और प्रविधि : सिंधी–हिंदी–सिंधी का संदर्भ | 30.09.2026 | 31.03.2027 |
| एम.टी.टी.–045<br>हिंदी–सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद | 30.09.2026 | 31.03.2027 |

*** सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि के बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए आप इग्नू वेबसाइट देखिए। आपको सलाह दी जाती है कि आप सत्रीय कार्यों को निर्धारित तिथि के पहले ही भेज दें।**

**उद्देश्य** : सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर

सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें। प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको भारतीय भाषाओं में अनुवाद, सिंधी–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन के साथ–साथ सिंधी और हिंदी भाषाओं के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। इसके अलावा अनुवाद संबंधी सिद्धांतों, प्रक्रिया और प्रविधि से भी परिचित कराते हुए इन भाषाओं में अनुवाद की परंपरा से अवगत कराया गया है।

## सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यों के लिए तीन उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

**आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :**

| | |
|---|---|
| कार्यक्रम का शीर्षक : ................................................ | नामांकन संख्या : ................................ |
| | नाम : ................................................ |
| | पता : ................................................ |
| | ................................................ |
| पाठ्यक्रम कोड :................................................ | |
| पाठ्यक्रम का शीर्षक : ................................................ | हस्ताक्षर :................................................ |
| सत्रीय कार्य कोड : ................................................ | तिथि : ................................................ |

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

## सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

- सत्रीय कार्य में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर लिखिए। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं, उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।

- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक हैं, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। मलयालम और हिंदी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

**सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :**

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों।

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो।

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुकूल हो।

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों।

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

# अनुवाद सिद्धांत और सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद परंपरा (एम.टी.टी.–043)

(जनवरी 2026 और जुलाई 2026 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–043
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–043/एएसटी/
(टी.एम.ए.)/2026

पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। लगभग 500 शब्दों में उत्तर दीजिए।

---

1. 'अनुवाद' और 'Translation' शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ स्पष्ट करते हुए अनुवाद के व्यापक एवं सीमित संदर्भ पर प्रकाश डालिए। 10
2. अनुवाद की सीमाओं और अननुवाद्यता से क्या अभिप्राय है? पाठ की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद की सीमाओं और अननुवाद्यता की चर्चा कीजिए। 10
3. भारतीय अनुवाद चिंतन परंपरा का परिचय प्रस्तुत कीजिए। 10
4. अनुवाद के इतिहास में बाइबिल अनुवादों की भूमिका स्पष्ट कीजिए। 10
5. प्रमुख आधुनिक पाश्चात्य अनुवाद सिद्धांतों का विवेचन कीजिए। 10
6. उत्तर–आधुनिकता की प्रमुख प्रवृत्तियों की व्याख्या कीजिए। 10
7. हिंदुस्तानी कृतियों के अरबी अनुवाद की परंपरा का वर्णन कीजिए। 10
8. सिंधी साहित्य की अनुवाद परंपरा का काल–विभाजन कीजिए और प्रारंभिक काल में अनुवाद परंपरा का वर्णन कीजिए। 10
9. स्वातंत्र्योत्तर काल में सिंधी से भारतीय भाषाओं में अनुवाद की परंपरा का विस्तृत परिचय दीजिए। 10
10. निम्नलिखित पर लगभग 250–250 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : 5x2=10

    (क) अनुवाद और अनुसृजन

    (ख) सिंधी अनुवाद परंपरा के विकास में अनुवादकों और पत्रिकाओं की भूमिका

***